"मत-विशेष"

• जे मोहाका घर मुहै घर मुहि पितरी देई । अगै वसत सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ । वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ । नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देई ।1।

अर्थ:- अगर कोई ठग पराया घर ठगे, पराए घर को ठग के वह पदार्थ अपने पित्रों के नमित्त दे, तो अगर सचमुच पिछलों का दिया पहुँचता है तो परलोक में वह पदार्थ पहचान लिया जाता है । इस तरह मनुष्य अपने पित्रों को भी चोर बनाता है क्योंकि उनके पास चोरी का माल निकल आता है । आगे प्रभु ये न्याय करता है कि ये चोरी का माल पहुँचाने वाले ब्राहमण

दलाल के हाथ काटे जाते हैं । हे नानक ! किसी का पहुँचाया आगे क्या मिलना है ? आगे तो मनुष्य को वही कुछ मिलता है जो कमाता है और हाथों से देता है ।

• गऊ बिराहमण कउ कर लावहु गोबरि तरण न जाई । धोती टिका तै जपमाली धान मलेछां खाई । अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजम तुरका भाई । छोडीले पाखंडा । नामि लइऐ जाहि तरंदा ।1।

अर्थः- हे भाई ! दरिया के पत्तन पे बैठ के गऊ और ब्राहमण को तो तू महसूल लगाता है भाव, गाय और ब्राहमण को पार लंघाने के लिए कर लगा लेता है, फिर तू ये नहीं सोचता कि जो गाय और ब्राहमण खुद नदी नहीं तैर सकते, उस गाय के गोबर से पोचा फेरने से, संसार - समुंदर से पार नहीं लांघा जा सकता । धोती पहनता है, टीका माथे पर लगाता है और माला फेरता है पर पदार्थ मलेछों के खाता है, भाव, पदार्थ उन लोगों के खाता है जिन्हें तू मलेछ कहता है । अंदर बैठ के भाव, तुर्क हाकिमों से चोरी - चोरी पूजा करता है, बाहर मुसलमानों को दिखाने के लिए कुरान आदि पढ़ता है, और मुसलमानों वाली ही रहत तूने रखी हुई है । इस पाखण्ड को छोड़ दे अगर प्रभु का नाम सिमरेगा तो ही संसार - समुंदर पार लांघेगा

• माणस खाणे करहि निवाज । छुरी वगाइनि तिन गलि ताग । तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद । उना भि आवहि ओई साद । कूड़ी रासि कूड़ा वापार ।

अर्थः- काजी और मुसलमान हाकम है तो रिश्वतखोर पढ़ते हैं नमाजें । इन हाकिमों के आगे मुंशी वह खत्री हैं जो छुरी चलाते हैं भाव, गरीबों पे जुल्म करते हैं पर उनके गले में जनेऊ है । इन जालिम खत्रियों के घर में ब्राहमण जा के संख बजाते हैं तब तो उन ब्राहमणों को भी उन ही

पदार्थों का स्वाद आता है भाव, वे ब्राहमण भी जुल्म के कमाए हुए पदार्थ खाते हैं । इन लोगों की यह झूठी पूंजी है और झूठ ही इनका ये व्यापार है ।

कूड़ बोलि करहि आहार । सरम धरम का डेरा दूर । नानक कूड़ रहिआ भरपूरि । मथे टिका तेड़ि धोती कखाई । हथि छुरी जगत कासाई ।

अर्थः- झूठ बोल - बोल के ही ये रोजी कमाते हैं । अब शर्म और धर्म की सभा उठ गई है भाव, ये लोक ना अपनी शर्म - हया का ख्याल करते हैं और ना ही धर्म के काम करते हैं । हे नानक ! सब जगह झूठ ही प्रधान हो रहा है । ये खत्री माथे पर तिलक लगाते हैं, कमर पे गेरूऐ रंग की धोती बांधते हैं पर हाथ में जैसे छुरी पकड़ी हुई है और मौका मिलते ही हरेक जीव पे जुल्म करते हैं ।

- नील वसत्र पहिरि होवहि परवाण । मलेछ धान ले पूजहि पुराण । अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा । चउके उपरि किसै न जाणा ।

अर्थः- नीले रंग के कपड़े पहन के तुर्क हाकिमों के पास जाते हैं, तभी उनके पास जाने की आज्ञा मिलती है । जिन्हें मलेछ कहते हैं, उनसे ही रोजी लेते हैं, और फिर भी पुराण को पूजते हैं भाव, फिर भी यही समझते हैं कि हम पुराण के मुताबिक चल रहे हैं । यहीं बस नहीं खुराक भी इनकी वह बकरा है जो कलमा पढ़ के हलाल किया हुआ है भाव, जो मुसलमानों के हाथों का तैयार किया हुआ है

दे कै चउका कढी कार । उपरि आई बैठे कूड़िआर । मत भिटै वे मत भिटै । इहु अंन असाडा फिटै । तनि फिटै फेड़ करेनि । मनि जूठै चुली भरेनि । कहु नानक सच धिआईऐ । सुचि होवै ता सच पाईऐ ।

अर्थः- कहते हैं कि हमारे चौके पे कोई और मनुष्य ना आ चढ़े । चौका बना के चारों तरफ लकीर खींचते हैं, पर इस चौके में वह मनुष्य आ बैठते हैं जो खुद झूठे हैं । और लोगों को कहते हैं हमारे चौके के पास ना आना कहीं चौका अपवित्र ना हो जाए और हमारा अन्न खराब ना हो जाए पर खुद ये लोग अपवित्र शरीर से बुरे कर्म करते हैं और झूठे मन से ही भाव, मन तो अंदर से मलीन है चुल्लियां करते हैं । हे नानक ! कह, प्रभु का ध्यान करना चाहिए तभी स्वच्छता - पवित्रता हो सकती है अगर सच्चा प्रभु मिल जाए ।

जिउ जोर सिरनावणी आवै वारो वार । जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होई खुआर । सूचे एहि न आखीअहि बहन जि पिंडा धोइ । सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ।2। पउड़ी ।

अर्थः- जैसे स्त्री को हर महीने माहवारी आती है और ये अपवित्रता सदा उसके अंदर से ही पैदा हो जाती है, वैसे ही झूठे मनुष्य के मुंह में सदा झूठ ही रहता है और इस करके वह सदा दुखी ही रहता है । ऐसे मनुष्य स्वच्छ नहीं कहे जाते जो सिर्फ शरीर को ही धो के अपनी ओर से पवित्र बन के बैठ जाते हैं । हे नानक ! केवल वही मनुष्य स्वच्छ हैं, सुच्चे हैं जिनके मन में प्रभु बसता है ।

• तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ । कोठे मंडप माड़ीआ लाई बैठे करि पासारिआ । चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ।

अर्थः- जिनके पास काठियों समेत भाव, सदा तैयार भर तैयार घोड़े हवा जितनी तेज चाल वाले होते हैं, जो अपने हरमों को कई रंगों से सजाते हैं, जो मनुष्य कोठे - महल - माढ़ियां आदि पसारे पसार के अहंकारी हुए बैठे हैं, जो मनुष्य मन - मानियां रंग - रलियां करते हैं, पर प्रभु को नहीं पहचानते वे अपना मानव जन्म हार बैठते हैं ।

करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरण विसारिआ। जर आई जोबनि हारिआ ।17।

अर्थः- जो मनुष्य गरीबों पे हुक्म करके पदार्थ खाते हैं भाव, मौजें करते हैं और अपने महलों को देख के अपनी मौत को भुला देते हैं, उन जवानी से ठगे हुओं को भाव, जवानी के नशे में मस्त हुए मनुष्यों को गफलत में ही पता ही नहीं चलता कब बुढ़ापा आ दबोचता है ।

- चिते अंदरि सभ को वेखि नदरी हेठि चलाइदा । आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा । वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ।

अर्थः- प्रभु हरेक जीव को अपने ध्यान में रखता है, और हरेक को अपनी नजर में रख के काम में लगाए रखता है । खुद ही जीवों को महानताएं बख्शता है और खुद ही उन्हें काम में लगाता है । प्रभु बड़ों से बड़ा है भाव, सबसे बड़ा है, उसकी रची हुई सृष्टि भी बेअंत है । इतनी बेअंत सृष्टि होते हुए भी हरेक जीव को प्रभु धंधों में जोड़े रखता है ।

नदर उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा । दरि गगनि भिख न पाइदा ।18। (1-471-472)

अर्थः- अगर कभी दुनिया के बादशाहों पर भी गुस्से की नजर कर दे, तो उन्हें भी खर - पतवार से हल्का कर देता है इतना हल्का कि उन्हें मांगने पर भीख भी नहीं मिलती ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"